70वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर

माननीय राज्यपाल डॉ. मृदुला सिन्हा का संदेश

मेरे प्रिय नागरिकों,

हमारी स्वतंत्रता की 70 वीं वर्षगांठ के पवित्र और गौरवशाली अवसर पर, मैं आप सबों को हार्दिक बधाइयाँ देती हूँ !

इस राष्ट्रीय उत्सव पर हम जाति, धर्म, रंग, लिंग तथा भाषा के भेदभाव को भुला, एकजुट होकर अपने प्रिय राष्ट्र की अखंडता और समृद्धि के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं । हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हमें अपने सम्मानित राष्ट्रीय ध्वज, प्रिय तिरंगे को नमन करने का अवसर बार–बार मिलता है। हमारे राष्ट्रीय ध्वज में भगवा, सफ़ेद और हरे रंग के साथ–साथ मध्य में अशोक चक्र सुशोभित है। हम सभी इस तथ्य से भली–भाँति अवगत हैं कि भगवा रंग बलिदान और साहस का प्रतीक है, सफ़ेद रंग हमारे विचारों में सच्चाई और शुद्धता का प्रतिबिंब है, हरा रंग जीवन में विश्वास और उत्साह को दर्शाता है और अशोक चक्र की 24 तिलियों से अनंत गति और प्रगति का बोध होता है । राष्ट्रीय ध्वज हमें अपने भीतर इन गुणों को धारण करने का संदेश देता है । आज अवसर है उन सभी महान आत्माओं को स्मरण करने का, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता और उन्नति के लिए बलिदान और साहस की वीर गाथाएँ रच डालीं !

हम अनेक भाषा, संस्कृति और धर्मों के बीच अनेकता में एकता की अवधारणा के साथ रहते हैं । हमारे पास 325 बोलियाँ और 22 सरकारी भाषाएँ हैं । हम कई धर्मों और संप्रदायों के अनुयायी होते हुए भी सद्भाव से रहते हैं और हर त्यौहार का जश्न, उत्साह और जुनून के साथ मनाते हैं । भारत पर्यटकों का पसंदीदा स्थान रहा है, हम सदैव से विदेशी पर्यटकों का भव्य स्वागत करके अपने आर्ष वचन "वसुधैव कुटुम्भकम्" और "अतिथि देवो भव" का पालन करते आए हैं । पिछले 70 वर्षों में भारत सबसे जीवंत और सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में उभर कर आया है ।

देवियों और सज्जनों!

जब ब्रिटिश सरकार ने भारत छोड़ा तब हमारा राष्ट्र आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ था । औद्योगिक उत्पादों के कारण, कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्प वस्तुओं पर आधारित आत्मनिर्भर गावों की अर्थव्यवस्था की माँग कम हो रही थी । हस्तकला और कुटीर उद्योगों में गिरावट के साथ, भारतीय समाज का पारंपरिक आधार खराब स्थिति में था । दूसरी ओर औद्योगिक विकास के क्षेत्र में भी कमी थी । नतीजन, हमारे देश में बहुसंख्यक आबादी अविकसित और गरीब रह गई । भारत सरकार को एक विशाल देश के संतुलित विकास और अर्थव्यवस्था के लिए योजना तैयार करनी थी । देश से गरीबी तथा निरक्षरता को हटाना व तकनीकी और औद्योगिक विकास करना सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी। हालांकि पिछले कुछ दशकों के दौरान, भारत ने इन्फॉरमेशन टेक्नौलॉजी, इन्फ्रास्ट्रकचर, इंडस्ट्रीयल, टेकनिकल, कृषि व अन्य क्षेत्रों में भारी प्रगति की है । वर्तमान में भारत को एक प्रमुख व शक्तिशाली आर्थिक देश माना जाता है । मेरा मानना है कि संसाधनों के अच्छे प्रयोग, आर्थिक कल्याण और राष्ट्र की स्थिरता के लिए आर्थिक वृद्धि और विकास की बड़ी आवश्यकता है ।

मित्रों!

यह चिंता का विषय है कि आज बेहतरीन आर्थिक विकास के मध्य कुछ ऐसे तत्व मौजूद हैं जो हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों और प्रगतिशील कदमों को विफल करने की कोशिश कर रहे हैं । आतंकवाद, नकसलवाद, हिंसा, सांप्रदायिक नफरत और ऐसी अनेक प्रतिक्रियावादी प्रवृतियाँ हमारे देश की एकता और अखंडता के लिए बहुत खतरनाक साबित हो रही हैं ।

हाल ही में गोवा के लिए कुरचोरें में कब्रिस्तान के कब्रों में स्थापित पवित्र क्रॉस और प्लेक्स के अपमान की हालिया घटना बहुत चिंताजनक थी। इस प्रकरण ने गोवा के लोगों के बीच दुःख और भय की लहर पैदा कर दी थी। मैं गोवा पुलिस द्वारा अविलंव कार्रवाई करने और अपराधी को सलाखों के पीछे भेजने के कार्य की सराहना करती हूं। मैं यहाँ उल्लेख करना चाहूँगी कि, यह घटना बहुत परेशान कर देने वाली

थी, लेकिन गोवा में उपस्थित सभी सम्प्रदायों के निवासियों ने एकजुट रहकर अपने राज्य के सामाजिक सद्भाव को हिलने नहीं दिया। यही है गोवा का विशेष सामाजिक जीवन, जो कठिन से कठिन परिवेश में हमारे सामाजिक सौहार्द और एकता के उदाहरण स्थापित कर जाता है। मैं यह भी मानती हूँ कि जब परस्पर विरोधी हित और भिन्न महत्वाकांक्षाएं हमारे जैसे लोकतांत्रिक व्यवस्था का हिस्सा हैं, हमें उदार रहकर एक दूसरे के साथ स्वयं को समायोजित करना सीखना चाहिए।

मित्रों!

गोवा राष्ट्र नक्शे में भले ही छोटा–सा नज़र आता है, लेकिन आज भी इसकी छवि जीवंत है। हालांकि गोवा को भारत की आज़ादी के चौदह वर्षों बाद आज़ाद होकर राष्ट्रीय मुख्यधारा में शामिल होने का अवसर प्राप्त हुआ, लेकिन आज मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि गोवा ने हर क्षेत्र में प्रशंसनीय प्रगति की है । आज गोवा एक ऐसे राज्य के रूप में उभरा है, जिसके आर्थिक व समाजिक सूँचकांक बहुत प्रभावशाली हैं । हालांकि हम सभी को राज्य की पिछली उपलब्धियों पर गर्व है, लेकिन हम अपनी उपलब्धियों पर गर्व करते शांत नहीं बैठ सकते। राज्य सरकार, राज्य के दीर्घकालिक विकास के लिए कई प्रमुख परियोजनाओं की पहल कर रही है , जिसे समयबद्ध आधार पर कार्यान्वित करने की आवश्यक्ता है । इसके लिए, हमारे प्रशासनिक और सेवा वितरण प्रणाली को मज़बूत किया जाना चाहिए ताकि वे अधिक कुशल, उत्पादक, परिणाम–उन्मुख और लोगों की आकांक्षाओं के प्रति उत्तरदायी हो सकें।

गोवा एक उत्कृष्ट पर्यटक स्थल है । इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में उच्च विकास के लिए गोवा राज्य में विशाल क्षमता है । हम इस तरह के उद्योगों में विकास के लिए नए अवसर और योजनाओं का निर्माण कर रहे हैं और विश्व स्तर की पर्यटक सुविधाओं को सुलभ बनाने की कोशिश हो रही है। साथ ही हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि, उच्च प्रगति प्राप्त करने के हमारे सभी प्रयासों में, प्राचीन प्राकृतिक,

पर्यावरण और सांस्कृतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक मूल्य जो गोवा को हमारे देश में एक अनूठा राज्य बनाते हैं, उनसे कोई समझौता नहीं होना चाहिए ।

मित्रों!

स्वच्छ भारत अभियान की ब्रांड एंबेसडर के रूप में, मैं लोगों के बीच जागरूकता फैलाने की अपनी कोशिशों को जारी रखती हूँ, बच्चों को विशेष रूप से स्वच्छता की आदतें डालने और इसके महत्व के बारे में जानने और समझने की आवश्यकता है । दरअसल इस अभियान का मूल उद्देश्य मनुष्य की आदतों में परिवर्तन लाना ही है। मुझे इस राष्ट्रीय कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विभिन्न वर्गों के सहयोग की आवश्यकता है, राज्य सरकार भी इस कार्यक्रम में गंभीरता से पहल कर रही है । शहरी निकायों और पंचायत अपने क्षेत्रों में स्वच्छता और स्वच्छता की स्थिति में सुधार के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। मेरे निरंतर और सतत आग्रह के बाद, स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिए जनसमुदायों से काफी सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई हैं।

मित्रों,

बच्चे और युवा भारतीय समाज के मुख्य और अहम हिस्सा हैं, इसलिए मूल्याधिष्ठ शिक्षा हमारे देश को प्रगतिशील और महान बनाने के लिए आवश्यक है । मूल्य आधारित शिक्षा का उद्देश्य और मुख्य कारण बच्चों और युवाओं के एक समस्त और सुदृढ़ व्यक्तित्व का विकास है, और मानव मन के सभी आयामों को विकसित करने के लिए आवश्यक है। हमारे बच्चे हमारे राष्ट्र को अधिक लोकतांत्रिक, एकजुट, सामाजिक रूप से ज़िम्मेदार, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और बौद्धिक रूप से प्रतिस्पर्धी राष्ट्र बना सकें। इसलिए बचपन से ही मूल्याधिष्ठ शिक्षा की शुरुआत बहुत आवश्यक है। इतिहास के जिन पन्नों पर भारत की गौरव गाथाएं लिखी हैं, उन कालों में परिवारों में संस्कार और शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा मूल्याधिष्ठ हीं थी।

हमें भारत के सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना चाहिए और लोकतंत्र, कानून, शासन, धर्मनिरपेक्षता, सार्वभौमिक भाईचारे, सामाजिक सामंजस्य, वैज्ञानिक

स्वभाव और जागरूकता की भावना के मूल्यों को संजोना चाहिए, जो हमारे राष्ट्र का सबसे अनूठा हिस्सा है।

सबसे बड़ा मंत्र यह है कि हम उन तत्त्वों के बारे में चिंता ना करें जो हमारे पास नहीं हैं । हमें अपने महान व्यक्तियों द्वारा सिखाए गए मूल्यों और सिद्धांतों का पालन करके अपने देश को एक बेहतर और सुरक्षित स्थान बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए ।

मित्रों!

माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 अगस्त को स्वयं संकल्प लेकर देश की जनता का आह्वान किया है कि, इस 15 अगस्त को हमसब संकल्प करें "गंदगी, गरीबी, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, जातिवाद, साम्प्रदायवाद से मुक्त भारत बनाएं।

आइए! हम उपरोक्त संकल्पों के लिए ज्ञान अर्जित करें। मैं आप सबसे अनुरोध करती हूँ कि इस स्वतंत्रता दिवस पर इसे ही अपना संकल्प बनाएँ । यदि प्रत्येक व्यक्ति इन सैद्धांतिक मूल्यों का पालन करेगा तो उससे उसका विकास होगा, जिससे उसके परिवार और आस–पास का भी विकास होगा और अंततः हमारा राष्ट्र उन्नति की ओर बढेगा । इसलिए आज हम सबको इस शुभ स्वतंत्रता दिवस पर वचन देना है कि हमें अपनी मातृभूमि के भविष्य को उज्जवल करना है।

हमारे संविधान में व्यक्ति की स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया गया है। संविधान के अनुसार समता व स्वातंत्र्य अधिकार, शोषण के विरुद्ध तथा धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार, संस्कृति और शिक्षा संबंधी एवं संवैधानिक उपचारों का अधिकार सहित कई अधिकार दिए गए हैं।

हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम दूसरे की स्वंतत्रता को किसी भी प्रकार से हनन नहीं करें और स्वतंत्रता चूंकि अधिकार भी है तो अपने कर्त्तव्य की लागत लगाकर इस अधिकार को हासिल करें।

देश की स्वतंत्रता को अक्षुण्य और व्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रभावी तथा व्यवहारिक बनाने के लिए परिवारों में बुजुर्गों का उचित सम्मान और सेवा, महिला को सुरक्षा तथा बच्चों को स्नेह, शिक्षा और आगे बढ़ते रहने का अवसर–प्रोत्साहन मिलते रहना चाहिए। परिवार ही प्रथम इकाई है। ''संग चले जब तीन पीढ़ियाँ, चढ़े विकास की सभी सीढ़ियाँ।'' इस सूत्र को सुदृढ़ बनाकर हम समाज को सशक्त और संस्कारी बना, स्वतंत्रता की रक्षा कर सकते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम जिस तरह से अपनी आजादी हासिल कर चुके हैं, उन कठिनाईयों को हर पल स्मरण रखें। हम दुनिया में अहिंसक स्वतंत्रता आंदोलन के अग्रणी थे। गैर हिंसा एक ऐसी अवधारणा है जिसे लगभग सभी धर्मों में प्रचारित किया गया है और हमने अहिंसा द्वारा ही महात्मा गाँधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता प्राप्त की, हमने बिना हिंसा के ही अपनी आजादी हासिल की है।

मैं मार्क ट्वेन के एक प्रसिद्ध उद्धरण के साथ समापन करना चाहूंगी :

"India is the cradle of the human race, the birthplace of human speech, the mother of history, the grandmother of legend, and the great grandmother of tradition. Our most valuable and most constructive materials in the history of man are treasured up in India only".

जय भारत, स्वतंत्र भारत – जय गोवा, स्वच्छ गोवा।